

प्रो० डा० राजीव रंजन पाण्डेय

सहायक प्राध्यापक

दर्शन विभागा

आर०वी०जी० आर० कालेज महाराजगंज
(सिवान)

जय प्रकाश विश्वविद्यालय, वाराणसी
मो०- 870900/909

न्यायदर्शन के प्रणीता महर्षि गौतम, जिन्हें अक्षपाद नाम से भी जाना जाता है। अन्य दर्शनों के भाँति इसका भी लक्ष्य है - दुःखनिवृत्ति। इसके अनुसार प्रमाण, प्रमेय आदि 16 पदार्थों का ज्ञान होने पर दुःख एवं उसके कारणों का समूल परम्परा का नाश होता है। न्यायदर्शन का प्रमुख प्रतिपाद्य-विषय प्रमाणमीमांसा है। पदार्थों के तत्त्वज्ञान द्वारा मोक्ष प्राप्ति संभव है। इस सन्दर्भ में 16 पदार्थ हैं।

① प्रमाण - यह यथार्थज्ञान का साधन है। Ex- प्रत्यक्ष अनुमान, शब्द, उपमान

② प्रमेय - प्रमा के विषय को प्रमेय कहते हैं। इसमें आत्मा, शरीर, पंच ज्ञानेन्द्रिया, अर्थ (इन्द्रियों के विषय) बुद्धि, मन, प्रवृत्ति, दोष (राग, द्वेष, मोह), प्रेत्यभाव (पुनर्जन्म), फल, दुःख एवं अपवर्ग, ये 12 प्रमेय स्वीकार किये जाते हैं।

* ज्ञानादि गुणों का आधार द्रव्य आत्मा है।

* विभिन्न क्रियाओं एवं चोष्टा मा आश्रय शरीर है।

* उपलब्धि का साधन इन्द्रिय है।

१. वाह्य- पंचज्ञानेन्द्रियाँ २. आन्तर- शब्दरसरूपगंधस्पर्श

* २. पंचसुक्ष्मतन्मात्राः अर्थ ५।

- * पंचतन्मत्रा का आत्मा के समक्ष प्रकाशन बुद्धि है।
- * सुखदुःखादि प्रत्यक्ष का साधन अन्तःकरण मन है।
- प्रत्यक्ष शरीर में एक-एक मन है। अपवर्ग की अवस्था में भी आत्मा के साथ इसका सम्बन्ध धूँतानहीं।
- * शारीरिक, मानसिक और वाचिक कार्य प्रवृत्ति हैं।
- * राग, द्वेष, मोहादि दोष हैं।
- * पुनर्जन्म प्रेत्यभाव है।
- * आत्मा का सम्बन्धन और दुःखमिवृत्ति अपवर्ग (निःशेष) है।

③ संशय - मन की अनिश्चित अवस्था को, जिसमें मन के सामने दो या दो से अधिक विरुद्ध उपस्थित होते हैं, संशय कहलाता है।

④ प्रयोजन - जिस वस्तु की प्राप्ति के लिए जो कार्य किया जाता है, उसे प्रयोजन कहते हैं।

⑤ दृष्टांत - ज्ञान के लिए अनुभव किये हुए उदाहरणों को दृष्टांत कहा जाता है।

⑥ सिद्धांत - सिद्ध स्थापित सिद्धांत को मानकर ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ना सिद्धांत कहा जाता है।

* जो सिद्धांत सर्वमान्य हो, वह सर्वतंत्र सिद्धांत है।

Ex - पृथ्वी एक भौतिक तत्व है।

* किसी एक शास्त्र का सम्मत और अन्य शास्त्रों का असम्मत सिद्धांत प्रतितंत्र सिद्धांत है। Ex - शब्द विच्छेद, इक्षु मीमांसक सही और अन्य दर्शन गलत मानते हैं।

* एक सिद्धांत मान लेने पर अपने आप जो सिद्धांत मानना पड़ता है, वह अविकरण है। Ex - ईश्वर जगतकर्ता है, यह मानने पर यह भी मानना पड़ता है कि वह सर्वशक्तिमान सर्वज्ञ है।

* जिसका किसी शास्त्रकार ने स्पष्ट उल्लेख न किया हो, किन्तु जो अभीष्ट है। जैसे - मन एक इन्द्रिय है। हालाँकि न्याय दर्शन में कहीं उल्लेख नहीं है, किन्तु स्वीकार किया गया है। इसे अभ्युपगम सिद्धांत कहते हैं।